परमात्म ऊर्जा

कई ऐसी दो-दो बातें होती हैं न्यारा और प्यारा, महिमा और ग्लानि। तुम्हारा प्रवृत्ति मार्ग है ना। आत्मा और शरीर भी दो हैं। आप और दादा भी दो हैं। दोनों के कर्त्तव्य से विश्व परिवर्तन होता है। तो प्रवृत्ति मार्ग अनादि, अविनाशी है। लौकिक प्रवृत्ति में भी अगर एक ही ठीक चलता है, दूसरा ढीला होता है, बैलेन्स ठीक नहीं होता है तो खिटखिट होती है, समय वेस्ट जाता है। जो श्रेष्ठ प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं कर पाते हैं। एक पांव से चलने वाले को क्या कहा जाता है? लंगड़ा। वह हाई जम्प दे सकेगा व तेज दौड़ लगा सकेगा? तो इसमें भी अगर समानता नहीं है तो ऐसे पुरूषार्थी को क्या कहा जावेगा?

अगर पुरूषार्थ में एक चीज़ की प्राप्ति अधिक होती है और दूसरे की कमी महसूस करते हैं तो समझना चाहिए कि हाई जम्प नहीं दे सकेंगे, दौड़ नहीं सकेंगे। तो जब हाई जम्प नहीं दे सकेंगे, दौड़ नहीं सकेंगे तो सम्पूर्णता के समीप कैसे आयेंगे? यह कमी आ जाती है तो स्वयं भी वर्णन करते हो। स्नेह के समय शक्ति मर्ज हो जाती है, शक्ति के समय स्नेह मर्ज हो जाता है। तो बैलेन्स ठीक नहीं रहा ना! दोनों का बैलेन्स ठीक रहे, इसको कहा जाता है कमाल। एक समय एक जोर है, दूसरे समय पर दूसरा जोर है, तो भी दूसरी बात। लेकिन एक ही समय पर दोनों बैलेन्स ठीक रहें, इसको कहा जाता है सम्पूर्ण। एक मर्ज हो दूसरा इमर्ज होता है तो प्रभाव एक का पड़ता है। शक्तियों के चित्रों में सदैव दो गुणों की समानता दिखाते हैं- स्नेही भी और शक्ति रूप भी। नैनों में सदैव स्नेह और कर्म में शक्ति रूप। तो शक्तियों को चित्रकार भी जानते हैं कि यह शिव शक्तियां दोनों गुणों की समानता रखने वाली हैं।

इसलिए वह लोग भी चित्र में इसी भाव को प्रकट करते हैं। जब प्रैक्टिकल में किया है तभी तो चित्र बना है। तो ऐसी कमी को अभी सम्पन्न बनाओ, तब जो प्रभाव निकलना चाहिए वह निकल सकेगा। अभी इस बात का प्रभाव जास्ती, दूसरों का कम होने कारण थोड़ा प्रभाव होता है। एक बात का वर्णन कर देते हैं, सभी का नहीं कर सकते। बनना तो सर्व गुण सम्पन्न है ना। तो ऐसे सम्पूर्णता को समीप लाओ। जैसे धर्म और कर्म, दोनों का सहयोग बताते हो। लोग दोनों को अलग करते हैं, आप दोनों का सहयोग बताते हो। तो कर्म करते हुए धर्म अर्थात् धारणा भी सम्पूर्ण हो तो धर्म और कर्म दोनों का बैलेन्स ठीक होने से प्रभाव बढ़ेगा।

आवश्यकता

निम्नलिखित पदों पर ग्लोबल अस्पताल माउंट आबू एवं आबू रोड में सेवा (Job) हेतु डॉक्टर्स तथा भाई-बहनों की आवश्यकता है–

1. फिजिशियन/Physician-M.D./DNB (Medicine)
2. पैथोलॉजीस्ट /Pathologist-M.D./DNB (Pathologist)
3. ब्लड बैंक काउन्सलर/Blood Bank Counselor- MSW/M.A. in Psychology, Sociology, Human Development
4. नर्सिंग ट्यूटर/Nursing Tutor-BSc(N) With teaching experience

उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें – 9414374589 (सुबह 9 बजे से 5 बजे के बीच) **ई-मेल** —ghrchrd@ymail.com

कथा सरिता

संघर्ष बनाता मजबूत...

एक व्यापारी अपने व्यापार को लेकर बहुत परेशान रहता था। उसका व्यापार में नुकसान हो रहा था और वह लगातार कर्ज़ में डूबता जा रहा था। वह संघर्ष करके थक चुका था। बहुत मेहनत के बावजूद भी अच्छे परिणाम उसे नहीं मिल रहे थे।

एक दिन उसने सोचा कि कुछ दिनों के लिए वह सब काम छोड़कर जंगल चला जाए और वहाँ कुछ दिन अकेले बिताये और अपनी परेशानियों का हल खोजने के लिए मनन चिंतन करे। जंगल में वक्त बिताते हुए उसे सात दिन हो चुके थे। उसका मन अब भी अपने संघर्षों पर ही टिका हुआ था। बार-बार वह अपने संघर्षों के बारे में सोचकर दुःखी हो रहा था। तभी उसे एक साधु महात्मा दिखे, जो उसी जंगल में एकांत में बैठे ध्यान कर रहे थे। साधु के अपने आसन से उठने पर वह व्यापारी उनके पास गया और सारी बातें उन्हें कह डाली।

साधु मुस्कुराते हुए बोले, चलो मैं तुम्हें अपने बगीचे में लेकर चलता हूँ और वहाँ तुम्हें अपने संघर्ष के लिए उत्तर मिल जाएगा। व्यापारी और साधु उनके बगीचे में चले गए।

साधु ने कहा कि घास से भरी इस हरियाली को देखो, मैंने यहाँ इसका बीज बोया था ताकि यहाँ हरी-भरी घास से यह बगीचा भर जाए और हमारे गौ माता के लिए भोजन की व्यवस्था हो सके। मैंने यहाँ घास के बीज और बांस के बीज लगाए थे। बहुत जल्दी घास ज़मीन से निकलकर बड़ी होने लगी लेकिन जिस जगह पर बांस के बीज थे वहाँ पर कुछ भी हलचल नहीं हुई। मैंने दोनों जगह ठीक वैसे ही देखभाल की लेकिन बांस ज़मीन से निकलने का नाम ही नहीं ले रहे थे। हर साल घास और घनी हो रही थी लेकिन तीन साल में बांस के बीज पर कोई असर नहीं पड़ा। पांच साल बाद उस बांस के बीज से एक पौधा अंकुरित हुआ। छः वर्ष होने पर यह छोटा-सा बांस का पौधा सौ फीट लम्बा हो गया। इन छः वर्षों में इसकी जड़ें इतनी मजबूत हो गई कि सौ फीट के ऊंचे बांस को संभाल सके। बांस के छः साल का यह संघर्ष उसे मजबूत बना रहा था।

साधु महात्मा ने उस व्यापारी को बांस का वह बगीचा भी दिखाया और व्यापारी यह देखकर सब समझ गया कि संघर्ष तो जीवन का हिस्सा है और जितना बड़ा संघर्ष होगा, वह उतना मजबूत बनेगा। व्यापारी अपने व्यापार को अब बेहतर बनाता चला गया, अपनी पुरानी गलतियों से सीख लेकर उसने अपने व्यापार में अच्छे परिवर्तन लाये, आज उसका संघर्ष उसे जीतने की हिम्मत दे रहा था।

सीखः संघर्ष हर किसी के जीवन में आता है। बिना संघर्ष के आजतक किसी ने भी बड़ा मुकाम हासिल नहीं किया। यदि आप संघर्ष से घबराएंगे तो कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। संघर्ष आपको बहुत मजबूत बनाता है ताकि आप अपने भविष्य को बेहतर बना सकें।

वीरगंज-नेपाल। ब्रह्माकुमारीज़ समाज सेवा प्रभाग द्वारा विश्वदर्शन भवन सभागार में स्व उन्नति हेतु ज्वालामुखी योग भट्ठी साधना कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रविना, समाज सेवा प्रभाग के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. विरेन्द्र, प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. डॉ. ई.वी. गिरिश पटेल, पीस ऑफ माइंड के कार्यक्रम प्रसारक ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. गोकुल तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

अल्मोड़ा-उत्तराखंड। शिव जयंती कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. जेसी दुर्गापाल पूर्व निदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग,उत्तराखंड, बीडी पांडे,पूर्व वित्त नियंत्रक,जिला विकास विभाग, डॉ. बंदना पांडे वैज्ञानिक एआरयू पिथौरागढ़, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. गणेश, ब्र.कु. हेमेंद्र तथा अन्य।

पीतमपुरा-दिल्ली। शिवरात्रि के अवसर पर वेलफेयर एसोसिएशन के भाई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

नगर डीग-राज.। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में कलश यात्रा एवं झांकी प्रदर्शन रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए नगर पालिका अध्यक्ष रामावतार मित्तल, उपाध्यक्ष बद्री प्रसाद खंडेलवाल, तेज भारत गैस डीलर लक्ष्मी नारायण कैप्टन, ब्र.कु. हीरा बहन, ब्र.कु. संध्या तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

बुराड़ी-दिल्ली। त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु. लाज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सुधा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मोकामा-बिहार। सेवाकेन्द्र आगमन पर सी.आर.पी.एफ. मोकामा घाट के ड्यूटी कमांडेंट उपेन्द्र सिंह और उनकी युगल सोनी सिंह को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा।